



12. अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा।

रेखांकित संज्ञाएँ क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। नीचे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़ों और समझो। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और कुछ क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखो -

मिठास, भूख, शांति, भोलापन, बुढ़ापा, घबराहट, बहाव, फुर्ती, ताजगी, क्रोध, मज़दूरी।

उत्तर:-

क्रिया से बनी भाववाच क संज्ञा	विशेषण से बनी भाववाच क संज्ञा	जातिवा चक संज्ञा से बनी भाव वाचक संज्ञा	भाववाच क संज्ञा
घबराना से घबराहट	बूढ़ा से बुढ़ापा	मजदूर से मजदूरी	क्रोध और फुर्ती शब्द भाववाच क संज्ञा शब्द हैं।
बहाना से बहाव	ताजा से ताजगी		
	भूखा से भूख		

	शांत से शांति		
	मीठा से मिठास		
	भोला से भोलाप न		

13. मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ।

उस बगीचे में अमलतास, सेमल, कजरी आदि तरह-तरह के पेड़ थे।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न हैं। नीचे ऐसे कुछ और समरूपी शब्द दिए गए हैं। वाक्य बनाकर उनका अर्थ स्पष्ट करो -

अवधि - अवधी, मैं - मैं, मेल - मैला, ओर - और, दिन - दीन, सिल - सील।

उत्तर:-

अवधि - दो सप्ताह की अवधि इतने बड़े कार्यक्रम के लिए कम है।

अवधी - कवि तुलसीदास अपनी रचना अवधी में करते थे।

मैं - कटोरी में खीर है।

मैं - मैं तो आज मेले जा रहा हूँ।

मेल - इस गाँव के किसानों में बड़ा मेल है।

मैला - यह कपड़ा कितना मैला है।

ओर - नदी के दोनों ओर हरे-भरे वृक्ष लहरा रहे थे।

और - नीरज और नीरव सगे भाई हैं।

दिन - इस कार्य को तुम दिन में ही समाप्त कर लेना।

दीन - दीन व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।

सिल - सिल पर पीसे मसालों का स्वाद बढ़िया होता है।

सील - इस लिफाफे की सील खोल दो।

